



# नाट्यसम्भव

## रूपक

जिसे

दिल्लानुसारी रसिकजनों के मनोविनोद के लिये

कृष्णबिबीपरिणय, आवण्णमयी, प्रेममयी, कनककुसुम,  
सुखसाधरी, हनुमहारिणी, लज्जलता, राजकुमारी,  
स्वर्गायु, सुम, श्रीलावली, सारा, अपला  
हथारि के रचयिता—

श्रीकेशरीलालगोस्वामी ने

बनाया

और

बाबू देवकीनन्दन खत्री ने

प्रकाशित किया ।

